त्रिलोचन शास्त्री की कहानियाँ: देशकाल की अन्तर्वस्तु का विवेचन

बीज शब्द : *त्रिलोचन शास्त्री, हिन्दी कहानी, देशकाल, अवधी साहित्य,अवधी कहानी।*

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
शोध संचयन

त्रिलोचन शास्त्री का कवि व्यक्तित्व इतना विराट है कि उनकी अन्य विधा का लेखन स्वयं उनकी अवरोध उपस्थित करता है। त्रिलोचन का कहानी संग्रह देशकाल अवधी समाज की संवेदना को इतने गहरे स्तर पर व्यंजित करता है कि यह त्रिलोचन शास्त्री को एक श्रेष्ठ कथाकार सिद्ध करता है। यह शोध आलेख त्रिलोचन शास्त्री के कहानी संग्रह देशकाल में संकलित कहानियाँ की समीक्षा प्रस्तुत करता है।

अर्जुन शर्मा
शोधा-छात्र-हिन्दी
जे0आर0एफ0
'हिन्दी-विभाग' गाँधाी शताब्दी
स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोयलसा
आजमगढ़, उ0प्र0
मो0 07081084391, 09819135870

प्रगतिशील काव्य-धारा में त्रिलोचन शास्त्री की ख्याति मुख्य रूप से एक समर्थ कवि के रूप में ही हुई है। किन्तु त्रिलोचन शास्त्री ने गद्य भी प्रचुर मात्रा में लिखा हैं। इनके संदर्भ मे रेवती रमण जी लिखते हैं कि- ''वैसे तो त्रिलोचन मूलतः कवि के रूप में ही प्रसिद्ध हैं। किन्तु कवि के साथ ही साथ उनमें गद्य लेखन की प्रखर दृष्टि भी मौजूद थी। उनका गद्य एक कवि का गद्य नहीं है, वह एक विधिवत गद्य है, जिसे निराला जीवन संग्राम की भाषा कहते हैं, कुछ वैसा ही।''[1] बात सही भी है त्रिलोचन शास्त्री जी के काव्य रचनाओं का जो रचनात्मक स्वरूप निर्मित हुआ है। इससे त्रिलोचन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की पहचान एक समर्थ कवि के रूप में तो होती ही है। साथ ही उनके गद्यात्मक संरचनाओं में भी उनका व्यक्तितव अपने मुखर स्वरूप में उभर कर सामने आया है। जिसे उनके कहानियों में भी देखा जा सकता है।

त्रिलोचन शास्त्री की कहानियों का संकलन 'देशकाल' नाम से सन् 1986 ई0 में राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में कवि ने 'बीस' कहानियों को संकलित किया है। इन कहानियों में न सिर्फ कल्पनात्मकता, कथात्मकता के गुण ही सन्निहित हैं, अपितु इन कहानियों में कवि के जीवन का यथार्थ उसके देखे एवं भोगे हुए जीवनानुभवों की अभिव्यक्ति हुई है।

त्रिलोचन शास्त्री का जन्म एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने किसान जीवन की मार्मिक व्यथा-कथा को नज़दीक से देखा और भोगा है। इस देखे और भोगे हुए को त्रिलोचन जब अपनी कविताओं में नहीं समेट पाते हैं तो उसे अपनी कहानियों में चित्रांकित करते हैं।

नयी कविता के अनेक ऐसे कवि हैं। जिन्होंने कहानियाँ भी लिखी है और उनकी कहानियों पर समीक्षकों का ध्यान विशेष रूप से गया भी है। किन्तु त्रिलोचन की कहानियों की चर्चा कम ही हुई है। इसकी वजह भी है जैसे कि त्रिलोचन की काव्य रचनाओं का संसार काव्य के प्रचलित बाह्य प्रतिमानकों में फिट नहीं बैठता है। इसका मूल कारण यह है कि उनके काव्य रचनाओं का मर्म बाहर नहीं अपितु उसी के भीतर है। जैसे- लोहे की धार लोहे के बाहर नही अपितु लोहे के भीतर होती है। उसी तरह त्रिलोचन की कहानियों के मर्म उनकी कहानियों के भीतर ही देखे जा सकते हैं। जिस प्रकार से त्रिलोचन ने अपनी कविताओं के वर्ण-विषय का ताना-बाना सामान्य जनता के जीवन के बीच से ही रचा-बुना है। उसी तरह से उनकी कहानियों मे भी सामान्य जन-जीवन की अभिव्यक्ति हुई है। इसी पृ0 पर डॉ0 रेवती रमण

जी लिखते हैं कि- 'महावीर अग्रवाल' के संवाद के सिलसिले में त्रिलोचन शास्त्री ने कहा है कि - ''ग्रामीण जीवन मुझे प्रारम्भ से ही प्रभावित करता रहा है। कविता मैं बचपन से लिख रहा हूँ कभी-कभी कोई चरित्र कविता में पूरी तरह नहीं समा पाता। जब बात कविता में पूरी तरह नहीं कही जा सकती तब वह धीरे-धीरे कहानी का रूप ग्रहण कर लेती है।''[2]

त्रिलोचन शास्त्री का उपर्युक्त कथन उनके गद्यात्मक रचनाओं का मूलतत्व है। क्योंकि बात सही भी है, कविता में व्यक्ति स्वतंत्र भाव-लोक में तो विचरण करता है पर लेखन के समय उसकी कलम काव्य के अनुशासनों में बंधी होती है। उसे अपने भावों एवं विचारों को एक निश्चित शब्दों एवं शिल्पगत अनुशासन की विशिष्टताओं में आबद्ध होकर ही हृदयगत भावों को व्यक्त करना होता है, जबकि गद्य में रचनाकार स्वतन्त्र होकर अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्ति करता है। इस दृष्टि से त्रिलोचन अपनी कहानियों में अपने जीवन के विस्तृत अनुभवों की अभिव्यक्ति करने में सफल हुए हैं। त्रिलोचन अपनी कहानियों में जैसे- 'देशकाल', 'अपनी इज्जत आप करो, नदी के किनारे, जिउघन, संबंध, सोलह आने, बाड़ा सियार, व बरसा लागी मोरी गुइयाँ आदि कहानियों में उनकी जन प्रतिबद्धता व जन संवेदनात्मक अभिव्यक्ति को देखा जा सकता है। इनके कहानियों के संदर्भ में डॉ0 अजीत प्रियदर्शी लिखते हैं कि-

''इस संग्रह की कहानियाँ आजादी के पूर्व के गाँव की विडम्बनाओं और बदले हुए मानवीय नाते-रिश्ते व क्षीण होती हुई मानवीय संवेदना का जितना यर्थात चित्र त्रिलोचन शास्त्री की कहानियाँ करती हैं उतना कम ही लेखकों में इतना यथार्थपरक चित्र देखने को मिलता है। जहाँ त्रिलोचन शास्त्री की कहानियों में समाज में व्याप्त शोषण एवं अत्याचार की बढ़ती समस्या का चित्रण हुआ है। जिसमें रोजी-रोटी के साथ ही रोटी और बेटी (इज्जत) की दारूण व्यथा-कथा का जो परिवेश सुनाती है।''[3] त्रिलोचन जी की कहानियाँ सामान्य जनता के जीवन का जो परिवेश निर्मित करती हैं, उतना इनके समकालीन अन्य रचनाकारों में वैसी सपाट बयानी शायद ही कहीं देखने को मिल सकती है। ''त्रिलोचन शास्त्री अपनी कहानियों में जो भी प्रसंग उठाते हैं उसे बहुत ही सरल-सहज और स्वाभाविक प्रवाहमयता के साथ अभिव्यक्त कर देते हैं। इसी पृ0 पर डॉ0 अजीत प्रियदर्शी जी लिखते हैं कि- ''इन कहानियों में कवि का जनपद अपनी तमाम खूबियों एवं खामियों के साथ उपस्थित है।''[4] इन कहानियों में आये पात्रों एवं चरित्रों को त्रिलोचन जी ने सामान्य जनता के जीवन के बीच से उठाया है। जिसके कारण इन कहानियों में जीवन्तता अपने पूर्ण स्वरूप में उपस्थित है। नगई महरा, झूरी चमार, परसादू बाब, लालता सिंह, उदयराज सिंह, झिंगुरी केवट, सिउपाल, दुल्ली लाल, जिउधन, पंडाइन शिवहरख शुकुल और रामनाथ तथा वरूण, देवल और कमल जैसे पात्र सामान्य जन जीवन के बीच से ही लिए गये।

कवि ने इन कहानियों में अपने गाँव के परिवेश का ही चरित्र उठाया, जो सिर्फ इन्हीं के गाँव का न होकर पूरे भारत के गाँवों का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरणार्थ, 'देशकाल' नामक कहानी का यह अंश देखा जा सकता है। जिसका उल्लेख डॉ0 ध्रुव शुक्ल जी ने 'त्रिलोचन संचयिता' में इस प्रकार करते हैं- ''परसादू बाबा ने पूछा- करे बसदेउवा तहु छटनी-ओढ़नी मरावइ बदे कुछु कर्त-धर्त हये कि नाँइ?''

बासुदेव बोले- करब काहे न बाबा, करब।''

झिंगुरी बोला- ''एनकई त एकउ खेत न होय जवन दूबा से जलिआइ न ग होइ।''

रामकरन सिंह जिनका पुकारने वाला नाम 'ताली' है। ने बासुदेव के जोहार को स्वीकार करते हुए कहा- ''घोड़े की तंग और खेती, अपने हाथ न कसो न करो तो नहीं बनती।''[5]

गँवई मिठास से भरी हुई ठेठ अवधी बोली भाषा की सहज प्रवाहमयता से परिपूर्ण त्रिलोचन की कहानियाँ अपने समय की सच्चाई को अभिव्यक्त करती हैं। जहाँ एक ऐसा शोषक वर्ग है, जो शोषित पीड़ित जनता के खून को जोंक की तरह चूस लेता है। दीन-हीन जनता पशुओं से भी बदतर जीवन-जीने के लिए विवश है। इनकी इसी कहानी का निम्नलिखित अंश देखा जा सकता है। जिसमें लेखक ने मानवता की कामना की सुन्दर अभिव्यंजना को अभिव्यक्ति प्रदान किया है।

''नगई महरा बोले- 'हम तो इ न मानब कि रामायन में कुछु नाँइ न।''

बासदेउ की ओर देखकर नगई ने पूछा- ''क भइया तू काउ कहथ्या? रामायन फजूल भाटइ?''

बासुदेव कुछ कहने जा रहा था कि बीच में सिउपाल बोल पड़ा- ''काउ बा रामायन मँ? ओ से अच्छा त कबीर साहेब कहि ग बाटेंन। रामायन पढ़ि के हिन्नू आपन हिनुअई चेत थइ। मुसुरमान कँ मलिच्छ समझइ लाग थइ। ई कवनिउ बात आ। जबने से मनई-मनई मँ फरक परै उहउ कवनउ धरम आ।''

परसादू बाबा बोले- ''काउ कहथ्ये भगतवा? बम्हने, ठकुरे अउ अहिरे चमारे मँ कौनउ भेदइ नाइ बा? सब बरोबरि होए जाए।'' सिउपाल बोला- ''साहेब त सबका मनई बनई दिहे रहेन। इ मेड़ डाँढ़ त हम तूँ डारि लिहे रहे अब मेड़-डाँढ़ न रहे। कुलि एक होये। साहब कहे हयेन! ''आपन आपन मेड़ सम्हारा बहा जात बा पानी। ओइ चेताइ दिहे हयेन। अब हमरे सब कइ काम आ।''[7]

इन कहानियों के माध्यम से त्रिलोचन ने अपने समय के समाज में फैली जाति-धर्म, ऊँच-नीच, बड़े-छोटे के फर्क की

कड़वी सच्चाईयों का पर्दाफाश करते हैं। जिउधन के माध्यम से कवि स्वयं अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए दिखाई देते हैं।

एक तरफ इन कहानियों के माध्यम से कवि मानवता का जय घोष करता हुआ दिखाई पड़ता है तो दूसरी तरफ ये कहानियाँ समाज में व्याप्त ऊँच-नीच, जाति धर्म के नाम पर व्याप्त अन्याय व अत्याचार के कारण समाज में फैली असमानता पर कठोर प्रहार करती हुई ये कहानियाँ दिखाई देती है। बानगी स्वरूप अपनी इज्जत आप करो'' नामक कहानी का यह अंश देखा जा सकता है। जिसमें शोषकों की भूमिका का निर्वहन करने वाले ठाकुर साहब तथा शोषित समाज का प्रतिनिधि झुरी व उसका परिवार व रिश्तेदार करते हैं।

''बाबू साहब बोले- हमारे बहनोई आए हैं, इन्हें शाहगंज जाना है। पालकी से जायेंगे आदमी बुला कर चल जल्दी?

झुरिया- डर गया। हिम्मत करके बोला- ''आदमी कहाँ मिलेंगे मेरे बसाये तो हैं नहीं। और मैं रात से भूखा हूँ दस कोस तक मुझसे बोझा नहीं ढोया जायेगा। मैं नहीं जा सकता।

ठाकुर गरजे- इज्जत का सवाल है साले। आज वे न जा सके तो समझेंगे इनकों आदमियों का अकाल रहता है। जाना होगा नहीं तो हड्डी-हड्डी तोड कर रख दूंगा?

आदमी..................''

उनकी निगाह मेरे पाहुनो पर पड़ी।

''ये कौन साले हैं काठ जैसे पड़े हुए हैं उठा इन्हें पालकी ढोवें, नहीं तो एक-एक की खाल उतरवा लूँगा।''

मैंने कहा- ये मेरे पाहुने हैं। रात के भूखे हैं। नही जा सकते''

नहीं जा सकते? ठाकुर गरजे

मैंने कहा- ''हाँ''

गरजे - ''इज्जत न रहे''

मैंने कहा - मेरी इज्जत न रहे''

ठाकुर तड़प उठे- ''तेरी इज़्जत? तू कब से इज्ज़तदार हुआ साले?'' उस दिन मैं पीटा गया जैसे सन। मेरे पाहुने तक मेरे कारण पीटे गए।''[8]

उपर्युक्त कहानी को पढ़ने पर पता चलता है कि कवि ने आज़ादी के पहले देश में व्याप्त जमींदारी प्रथा की दारुण दशा का कितना मार्मिक किन्तु यथार्थ परक चित्रण किया है जो हृदय को कस कर झकझोर देती है और सोचने के लिए विवश कर देती है कि हमारे भारतीय समाज की यह क्रूर, अमानवीय प्रवृत्तियाँ कितनी घिनौनी थीं कि जहाँ आदमी को आदमी न समझ कर जानवर से भी बदतर समझा जाता था। यहाँ पर कवि ने समाज के एक ऐसे जमींदार वर्ग की संवेदनशून्यता का दृश्य सामने रखा है जो मानवीय संवेदना को ताख पर रख कर अपनी (शान) व बड़प्पन में ही अंधा बना हुआ है। और दूसरी तरफ एक वर्ग ऐसा भी है जो दो जून की रोटी के लिए हाड़-तोड मेहनत करता है। फिर भी वह भूखा ही सोता है। उसे उसके श्रम का पूरा प्रतिफल तक नहीं प्राप्त होता है, और न ही उसे जीवन में क्षणभर विश्राम करने का मौका ही मिलता है। तब तक जमींदार का कहर बरप पड़ता है।

समाज की इस व्यवस्था को देख कर त्रिलोचन का हृदय व्यथित हो उठता है। इस व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाकर कवि इस दबी कुचली जनता के जीवन में विद्रोह का स्वर मुखरित करते हुए दिखाई देते हैं। त्रिलोचन जनता के कवि हैं जनता की पीड़ा उसके दु:ख-दर्द को कवि कैसे सह सकता है। इसी दीन-दुखी जनता की वाणी को कवि अपनी कहानियों में आवाज देते हुए दिखाई पड़ते है। जनता की व्यथा-कथा को कवि जस का तस अपने कथा साहित्य में रखा है। इसमें कोई बनावटीपन नहीं यह कथा सहज-सरल सी प्रतीत होती हुई थी अपने आप में असाधारण प्रभाव छोड़ती है।

त्रिलोचन सहृदय कवि के साथ एक विवेकशील पाठक व सजग आलोचक एवं काव्य मर्मज्ञ के साथ ही साथ एक सहृदय कथा लेखक के रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं।

अपनी कहानियों में कवि अधिकतर गाँव से ही चरित्र उठाया है। जिस प्रकार ''रामवृक्ष बेनी पुरी की कहानी ''माटी की मूरते'' में गाँव से ही चरित्र उठाये गये हैं। उसी तरह से त्रिलोचन की कहानियों में भी देखा जा सकता है। इन कहानियों मे कवि अपने गाँव, जवार की परिस्थितियों में जीवन यापन करने वाले चरित्र को बड़ी संजीदगी से उठाते हैं। जहाँ ऊँच-नीच, जाति धर्म, की दारूण दशा का चित्रण कितनी बेबाकी के साथ रचनाकार ने किया है। जो इनकी (संबंध) कहानी में देखा जा सकता है। ''जिसमें एक विधवा स्त्री के शोषण की दारूण दशा का चित्रण हुआ हैं। इस कहानी में शिवहरख शुकुल और रामनाथ सिंह दो बड़े शोषक हैं। जिनको शोषण में महारत हासिल है। इन दोनों में कौन बड़ा शोषक है। कहना कठिन है। दोनों एक से बढ़कर एक हैं।

दोनों ने मिल कर पंडिताइन का धन और धर्म दोनों लूटा उनकी सारी जायदाद, रामनाथ सिंह पंडिताइन की सहायता के नाम पर हड़प लेते हैं, और शुकुल शिवहरख पंडिताइन और उनकी बेटी दोनों को अपने यहाँ ले जाते हैं। पंडिताइन को शिवहरख रखैल के रूप में रख लेते हैं। किन्तु बेटी को दो हजार रुपये में वेश्यावृत्ति के धन्धे में बेच देते हैं।''

इस कहानी के माध्यम से त्रिलोचन शास्त्री यह बताना चाहते हैं कि समाज का एक उच्च वर्ग जो शोषण की प्रवृत्ति से आवृत्त है। जिसकी मानवीय संवेदना मरी हुई है। उसे बस धन,

दौलत, भोग विलास के साधन की आवश्यकता होती है। ऐसे अत्याचारी वर्ग के लोगों से कवि सोई हुई जनता को जगाने का प्रशंसनीय कार्य अपनी इन कहानियों के माध्यम से करते हैं।

'जिउधन' कहानी में कवि जिउधन की पत्नी विपत्ता और लड़की फुत्ती की मनोदशा उसकी आकांक्षा तथा जिउधन का परदेश में रहने से सीखे हुए बात-चीत, वेश-भूषा, रहन-सहन के तौर तरीके, का यथार्थ चित्रण किया है। ''सोलह आने'' कहानी में 'देवल' के अन्दर आदर्श और मर्यादा का जो स्वरूप निर्मित किया है उस पर गाँधी वादी विचारधारा का प्रभाव दिखाई देता है। इस कहानी में वरूण, कमल और देवल अपनी-अपनी चारित्रिक विशेषताओं को अभिव्यक्ति करते हैं।

'बांडा सियार' कहानी को कवि अपने गाँव चिरानी पट्टी कटघरा पट्टी से उठाया है। इस कहानी की कथा वाचिका आकाशी बुआ है। जो कहानी सुनाती हैं। पात्र के रूप में 'होरिल' है। उसकी माँ व बहन हैं। तो 'बांडा सियार' भी है। इस कहानी में यह दिखाया गया है कि कभी-कभी दुर्भाग्य ही सौभाग्य का हेतु बन जाता है। यानी अभाव ही भाव का उपजीव्य होता है।

'बरसा लागलि मोरी गुइयाँ' त्रिलोचन जी की ऐसी कहानी है। जिसका परिवेश (बनारस शहर) का है जिसमें एक रिक्शा चालक की मनोदशाओं का यथार्थपरक चित्रण हुआ है। महीना लगने में छः दिन शेष है। पहली तारीख को उस रिक्से वाले का गवना है। जिसकी ख़ुशी में वह रिक्सा चालक मन ही मन प्रेम की कोमल मनोदशाओं को याद कर मधुर स्वर में कहने लगता है कि 'बरसा लागसि मोरी गुइयाँ' अर्थात मेरे भी जीवन में प्रेम की मधुर वर्षा होने वाली है। अब मेरा भी अपनी घर वाली से मिलने का समय नज़दीक आ गया है। अब हमारे जीवन में प्रियतम से वियोग की घड़ी समाप्त होने वाली है। अब अपनी प्रियतमा से मिलने का समय नजदीक आ गया है। अब हमारे भी जीवन में प्रेम की वर्षा होगी।

कहना न होगा त्रिलोचन शास्त्री प्रेम सौन्दर्य के कवि के साथ ही साथ प्रेम सौन्दर्य के कथाकार भी हैं। त्रिलोचन शास्त्री की प्रेम संवेदना की अभिव्यक्ति एक मर्यादित रचनाकार की अभिव्यक्ति है जो मर्यादा के भीतर ही अपनी प्रेम संवेदना की अभिव्यक्ति अपने पात्रों से करवाते हैं। जिनकी प्रेम संवेदना प्रेम के अथाह सागर में गोते लगाती है। उसमें कहीं पर भी मर्यादा के विपरीत चित्रण नहीं हुआ है। कवि इन कहानियों में सामान्य से सामान्य जन के जीवन में कठिन जीवन संघर्ष के बीच भी दाम्पत्य प्रेम का सहज स्वाभाविक स्वरूप निर्मित कर देता है। त्रिलोचन शास्त्री प्रेम सौन्दर्य के ऐसे चितेरे है जिन्होंने अपने जीवन में स्वयं प्रेम को अन्तर्मन से गहा है और इस गहे हुए यथार्थ को वे अपनी कहानियों में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।

इनकी कहानियों के संदर्भ में 'रेवती रमण' जी का यह कथन कितना सार्थक प्रतीत होता है कि ''कहानीकार त्रिलोचन प्रगतिशील है, यथार्थवादी हैं यह उनकी संवेदनशीलता ही है, जो कथा दृष्टि को मानवीय बना देती है।'' आगे डॉ0 रेवती रमण जी लिखते हैं कि- ''इन कहानियों में शिल्प की बारिकियाँ भले न हों पर वे असर छोड़ती हैं। उनमे आधिपत्य छोड़ने का आग्रह है। 'महाप्राण' में उसे ही श्रेय माना गया है जो आदमी को और अधिक मानवीय बना दे, सम्पूर्ण मानवता को अपनाने की प्रेरणा दे। त्रिलोचन की कहानियों में जो सबसे मूल्यवान चीज़ है वह है। माटी की सोधी गंध।''[9] इस प्रकार रेवती रमण जी का उपर्युक्त कथन त्रिलोचन शास्त्री को धरती का रचनाकार सिद्ध करती है जो जन जीवन के बीच की धरती से ही अपने कहानियों का परिवेश निर्मित करते हैं तथा शोषित-पीड़ित वंचित जनता की मूक व्यथा कथा को इन कहानियों के माध्यम से स्वर प्रदान करते हैं।

इस प्रकार त्रिलोचन की कहानियों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि त्रिलोचन शास्त्री ने अपनी कहानियों का जो स्वरूप निर्मित किया है। वह सामान्य जनता के जीवन के बीच के परिवेश से ही रची बुनी गयी हैं। जनता के अभावमय जीवन का इतना यथार्थपरक चित्रण वही रचनाकार कर सकता है जो स्वयं अपने जीवन में इसे भोगा हो। त्रिलोचन शास्त्री स्वयं अपने जीवन मे इस अभाव एवं शोषण को देखा और भोगा है। इसीलिए इनकी कहानियों की भाव व्यंजकता की धार बहुत ही पैनी बन पड़ी है। रचनाकार ने अपनी कहानियों मे सामान्य जन-जीवन के बीच की जमीनी सच्चाई को उठाया है और उसे अपनी अभिव्यंजनात्मक क्षमता की कुशलता से तीक्ष्णधार प्रदान करने की भरपूर कोशिश की हैं। जो त्रिलोचन शास्त्री को गद्य विधा के क्षेत्र में भी मजबूत पकड़ होने की स्वतः प्रमाण सिद्ध करती है।

इस प्रकार त्रिलोचन की कहानियाँ उनके रचनात्मक व्यक्तित्व की पहचान कराने के साथ ही साथ कथा साहित्य में भी अपना विशिष्टतम स्थान रखती हैं जिससे त्रिलोचनशास्त्री के गद्य-विधा के क्षेत्र में उनकी संवेदनात्मक एवं संरचनात्मक व्यक्तित्व क्षमता को भी देखने-परखने का अवसर प्रदान करती हुई दिखाई पड़ती हैं।

कुल मिलाकर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इनकी कहानियों में पायी जाने वाली जो सबसे मूल विशेषता दृष्टिगत होती है वह यह कि त्रिलोचन जी शोषित, पीड़ित, वंचित जनता के अभावमय जीवन को सभी तरह के शोषणों से मुक्ति दिलाकर उनके जीवन में समतावादी, समाजवादी, जनवादी विचारधारा को स्थापित कर उनके जीवन में मानवीय प्रेम सौन्दर्य का विकास करना चाहते हैं। जिससे सबके साथ समानता का व्यवहार हो

सके और सब को अपना जीवन अपने ढंग से जीने का पूरा-पूरा अधिकार प्राप्त हो सके। यही त्रिलोचन शास्त्री की कहानियों का मूल वैशिष्ट्य है।

संदर्भ :

1. भारतीय साहित्य के निर्माता 'त्रिलोचन' (रेवतीरमण) 'साहित्य अकादमी' (पुनर्मुद्रण 2014 एवं 16), पृ0 105
2. वही, पृ0 105
3. कवि त्रिलोचन- डॉ0 अजीत प्रियदर्शी- प्रथम संस्करण, 2012, साहित्य भण्डा, 30 चाहचंद इलाहाबाद, पृ0 81
4. वही, पृ0 81
5. त्रिलोचन संचयिता, सम्पादक- ध्रुव शुक्ल, (महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय संस्करण 2002), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- आवृत्ति 2012, पृ0 459
6. वही, पृ0 461
7. वही, पृ0 462
8. वही, पृ0 471
9. भारतीय साहित्य के निर्माता त्रिलोचन (रेवतीरमण) साहित्य अकादेमी पुनर्मुद्रण, 2014-16, पृ0 110
10. आजकल त्रिलोचन विशेषांक- (2010 अप्रैल, अंक 12), सम्पादक- योगेन्द्र दत्त शर्मा, सीमा ओझा।
11. आलोचना- 82 सम्पादक- नामवर सिंह
12. त्रिलोचन के बारे में- गोविन्द प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
13. साक्षात्कार- त्रिलोचन- अजीत प्रियदर्शी (हिन्दुस्तानी-पत्रिका-जनवरी-मार्च प्रथम अंक 2001)
14. वर्तमान साहित्य 2011- सम्पादक नमिता सिंह
15. ऋतुगंध- त्रिलोचन अंक

◆◆◆

(Continued from Page No. 50)

and receives equally. In this community of women, all reach out in support of each other, demonstrating a tremendous sense of responsibility for each other by looking out for one another. And in the end, the sharing of the common and individual experiences and ideas yields rewards of a transformed calm authentic 'self'.

REFERENCES

1. Toni Morrison. God Help the Child, London: Random House. 2015, p. 7.
2. Ibid. p. 57.
3. Ibid. p. 144.
4. Ibid. p. 152.
5. Ibid. p. 143.
6. Ibid. p. 162.
7. Ibid. p. 157.
8. Ibid. p. 29.
9. Ibid. p. 70.
10. Rudolph P. Byrd. 'Sound Advice from a Friend; Words and Thoughts from the higher Ground of Alice Walker'. Callaloo. 16, Spring-Summer, 1983, p. 181.

◆◆◆

(पृष्ठ 47 का शेष)

लखनऊ- 20, पृष्ठ-128-129.

21. नौका विहार (कविता शीर्षक से) सुमित्रानन्दन पंत रचना संचयन, चयन एवं सम्पादन, कुमार विमल, प्रकाशक: साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006 ई., पृष्ठ- 69.
22. वहीं - 69.
23. छायावाद (हिन्दी साहित्य का इतिहास), लेखक- रामचन्द्र शुक्ल, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ - 438.
24. वहीं, पृष्ठ - 439.
25. मौन निमन्त्रण (कविता शीर्षक से), सुमित्रानन्दन पंत रचना संचयन, चयन एवं सम्पादन, कुमार विमल, प्रकाशक: साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006 ई., पृष्ठ - 57.
26. वहीं, पृष्ठ - 58.
27. द्रतु झरो जगत के जीर्ण पत्र (कविता शीर्षक से), पृष्ठ - 74
28. मानव (कविता शीर्षक से), पृष्ठ - 77.
29. भूमिका, सुमित्रानन्दन पंत रचना संचयन, चयन एवं सम्पादन, कुमार विमल, प्रकाशक: साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006 ई., पृष्ठ - 10.
30. बादल (कविता शीर्षक से), सु मित्रानन्दन पंत रचना संचयन, चयन एवं सम्पादन, कुमार विमल, प्रकाशक: साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006 ई., पृष्ठ - 57.
31. Romanticism- Wikipedia, the free encyclopedia online,(search google.com - Romanticism).

Romanticism (also the Romantic era or the Romantic period) was an artistic, literary, and intellectual movement that originated in Europe toward the end of the 18th century and in most areas was at its peak in the approximate period from 1800 to 1850. It was partly areaction to the Industrial Revolution,the aristocratic social and political norms of the Age of Enlightenment, and the scientific rationalization of nature. It was embodied most strongly in the visual arts, music, and literature, but had a major impact on historiography, education,and the natural science It had a significant and complex effect on politics, and while for much of the Romantic period it was associated with liberalism and radicalism, its longtermeffect on the growth of nationalism was perhaps more significant.

◆◆◆